संपादकीय

पर्यावरण दिवस के बहाने.....

हर वर्ष पाँच जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है और इस वर्ष "विश्व पर्यावरण दिवस" 2023 की थीम "Solutions to Plastic Pollution" यानि प्लास्टिक प्रदूषण के समाधान पर आधारित है। "विश्व पर्यावरण दिवस" 2023 का मूल उद्देश्य दुनियाभर के लोगों को पर्यावरण से जुड़े मुद्दे जैसे ब्लैक होल इफेक्ट, ग्रीन हाउस का प्रभाव, जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग आदि मुद्दों को लेकर जागरूक करना है, साथ ही पर्यावरण की रक्षा के लिए लोगों को प्रेरित करना है।

वास्तव में भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण को बहुत महत्व दिया गया है। मानव जीवन को हमेशा मूर्त या अमूर्त रूप में पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्र, नदी , वृक्ष एवं पशु-पक्षी आदि के सहचर्य में ही देखा गया है। भारतीय चिंतन में पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा उतनी ही प्राचीन है जितना मानव जाति का इतिहास है। अतः भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण का भाव पुरातन काल में भी मौजूद था, पर उसका स्वरूप भिन्न था। उस काल में कोई राष्ट्रीय वन नीति या पर्यावरण पर काम करनेवाली संस्थाएं नहीं थीं। पर्यावरण का संरक्षण हमारे नियमित क्रिया-कलापों से ही जुड़ा हुआ था। इसी वजह से वेदों से लेकर कालिदास, सूर, तुलसी, जायसी, पंत, प्रसाद, निराला, अज्ञेय आदि तक सभी के काव्य में इसका व्यापक वर्णन हुआ है। भारतीय दर्शन यह मानता है कि इस देह की रचना पर्यावरण के महत्वपूर्ण घटकों पृथ्वी, जल, वायु, तेज और आकाश से ही हुई हैं।

भारतीय विचारधारा में जीवन का विभाजन भी प्रकृति पर ही आधारित था। चार आश्रमों में से तीन तो पूरी तरह से प्रकृति के साथ ही व्यतीत होते थे। ब्रह्मचर्य आश्रम, जो गुरु-गृह में व्यतीत होता था और गुरुकुल सदैव वन-प्रदेश, नदी तट पर ही हुआ करते थे, जहां व्यक्ति हमेशा प्रकृति के सानिध्य में रहता था। वानप्रस्थ आश्रम में भी व्यक्ति वन प्रदेशों में रहकर आत्मचिंतन तथा जन कल्याण के कार्य करता था। संन्यास आश्रम में तो समग्र उत्तरदायित्वों को भावी पीढ़ी को सौंपकर निर्जन वन एवं गिरि कंदराओं में रह कर ही आत्मकल्याण करने का विधान था। इसतरह हम देखते हैं कि मानव और प्रकृति का गहरा एवं अटूट सम्बन्ध हैं। वह प्रकृति की गोद में उत्पन्न होता हैं और प्रकृति के तत्वों के साहचर्य से ही जीवित रहता हैं। अतः मानव मात्र के विकास की सर्वांगीण प्रक्रिया प्रकृति की ही गोद में सम्पन्न होती हैं। हमारे चारों ओर व्याप्त प्राकृतिक तत्व पर्यावरण का सृजन करते हैं जिनसे सदैव ही मानव को अपने विकास के लिए प्रेरक मूलभूत तत्व प्राप्त होते रहे हैं।

किंतु इधर हमारे पर्यावरण का परिदृश्य बदलता जा रहा है। हमने टी. वीं. पर खबरे सुनी ही हैं कि लॉक डाउन के दौरान प्रकृति में एक अदभुत परिवर्तन आया। कोरोना ने भले ही मनुष्य पर आतंक की छाया बनायी रखी थी, हम मृत्यु के भय के आतंक में जी रहे थे किंतु प्रकृति मुक्त हो गयी थी। कारण मनुष्य का

हस्तक्षेप बहुत कम हुआ था। वर्तमान समय में पर्यावरण पर दबाव बढ़ता जा रहा है और मानव प्रकृति से दूर होता जा रहा है। बीसवीं शताब्दी में सभ्य मानव ने प्रकृति के साथ अत्यधिक छेड़-छाड़ की है। औद्योगिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के कारण प्राकृतिक तंत्र में अनेक विसंगतियाँ उत्पन्न हो गई हैं और मानव जाति के सम्मुख प्रकृति और पर्यावरण को लेकर अस्तित्वहीनता की स्थिति उत्पन्न होती जा रही हैं।

विकास की अंधी दौड़ में प्राकृतिक संसाधनों के अतिदोहन के कारण पर्यावरण की जीवनप्रदायिनी क्षमता में भारी कमी आई है जिसके कारण गुणवत्ता में गिरावट आई । मानव की अंधाधुंध एवं निरन्तर माँग ने भूमि, जल, वन एवं सम्पूर्ण पर्यावरणीय गुणवत्ता को प्रभावित किया और उसमें ह्रास की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होने लगी। पृथ्वी के तापमान का बढ़ना, ओजोन परत का क्षतिग्रस्त होना, मरूस्थलीकरण, एसिड वर्षा, बाढ़, सूखा, भूकम्प, सुनामी, अम्फान, गैस प्रदूषण आदि गम्भीर समस्याओं ने पर्यावरणविदों का ध्यान आकर्षित किया और पर्यावरण के महत्व को स्थापित करने एवं संरक्षण के प्रति मानवों में चेतना जागृत करने हेतु पर्यावरण अध्ययन को शिक्षा के महत्वपूर्ण अंग के रूप में स्वीकृत किया गया और आज स्नातक स्तर पर पर्यावरण एक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाता है।

भारतीय साहित्य के इतिहास के जब हम पन्ने खोलते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि साहित्य और प्रकृति का अन्योन्याश्रित संबंध रहा है। आदिकालीन साहित्य, मध्यकालीन साहित्य से लेकर अबतक के साहित्य में प्रकृति सहचरी बनकर ही हमारे सामने प्रस्तुत होती आयी है। उसका चित्रण अत्यंत सुंदरता से कवियों ने किया है, मैं छायावाद की केवल तीन कविताओं की आपको याद दिलाना चाहती हूँ.. पंत की मोह, प्रसाद की बीती विभावरी और निराला की जुही की कली... प्रकृति की सुंदरता का जो वर्णन इन कवियों ने किया है उससे हमारे सामने प्रकृति का मनोरम दृश्य उपस्थित हो जाता है। लेकिन प्रकृति के सौंदर्य की वह बात आते आते कविता से, साहित्य से दूर होने लगी कारण प्रकृति का सौंदर्य मैला होने लगा। उसमें प्रदुषण भरने लगा है।

पर्यावरण प्रदूषण 21वीं शताब्दी की सबसे बड़ी समस्या है। दिनोंदिन बढ़ती जनसंख्या, औद्योगीकरण, नगरीकरण इस समस्या को और बढ़ा रहे हैं। प्रदूषण के कारण भूमि, पृथ्वी, आकाश, जल सब कुछ प्रदूषित हो रहा है, लेकिन आधुनिकता की अंधी दौड़ के चलते किसी को इसकी परबाह नहीं है कि आने वाली पीढ़ी व वर्तमान जनसंख्या इसके लिए कितनी भारी कीमत चुका रही हैं। इक्कीसवीं सदी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के लिए ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए चुनौती भरी होगी। बीसवीं सदी जहां गुलामी की त्रासदी, आजादी के लिए संघर्ष और राष्ट्र निर्माण के प्रयासों में बीती, वहीं इक्कीसवीं सदी में देश के सामने कई अन्य चुनौतियां हैं, इनमें समाज के एक बड़े वर्ग में व्याप्त निरक्षता, जनसंख्या वृद्धि तथा तीव्र गति से बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण आदि प्रमुख हैं।

पर्यावरण हमारी असाधारण विरासत है। यह हमारे जीवन का आधार है, हमें जीने की संभावना प्रदान करता है और हमें समृद्ध बनने का अवसर देता है। हालांकि, वर्तमान में पर्यावरण के ह्रास के कारण हमें अपनी संरक्षा की आवश्यकता पर विचार करना होगा। प्रदूषित जल और वायुमंडल की विकृति, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण के अत्यधिक दोहन के कारण पर्यावरण में बदलाव हो रहा है। इसके परिणामस्वरूप हमें स्वास्थ्य समस्याओं, जैव विविधता की हानि, जलसंकट और मानसिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। यह चुनौती पूरी मानवता के लिए है। अतः हमें इस समस्या को सामने लेकर उस पर काम करना आवश्यक है। हमें

पर्यावरण संरक्षण के महत्व को समझकर प्राकृतिक संसाधनों की संरक्षा, उनका सुरक्षित उपयोग और नए सामरिक विकास के साथ संबंधित विकास अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए हमें ऊर्जा के उपयोग में सतर्कता बढ़ाने, प्रदूषण को नियंत्रित करने, जल संरक्षण के उपाय अपनाने और पर्यावरणीय शिक्षा देने हेतु प्रमुखता देनी होगी। पर्यावरण को बेहतर बनाये रखने के लिए हमें प्रकृति के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता हैं। अंत में कवि त्रिलोचन के शब्दों में

इस पृथ्वी की रक्षा मानव का अपना दायित्व हैं,
इसकी वनस्पतियाँ, चिड़ियां और जीव-जन्तु
उनके सहयात्री हैं, इसी तरह जलवायु और सारा आकाश
उसकी रक्षा में मानव की या तो रक्षा हैं,
नहीं तो स्वनाश अधिक दूर नहीं।

'आखर' के इस अंक में शोधालेखों के साथ साथ कहानी 'किस्सा ए सर्टिफिकेट', चंदना और कुमार मनिष अरविंद की कविताएँ, और पुस्तक समीक्षा आदि का समावेश है। आशा है आपको यह अंक पसंद आएगा। आपका स्नेह और सहयोग हमें हमेशा मिलता रहे ताकि हम **'आखर'** के माध्यम से साहित्य की सेवा कर सकें।

इति नमस्कारन्ते!

प्रधान संपादिका
प्रतिभा मुदलियार